आदि शंकराचार्य: 32 वर्षों में सनातन का पुनर्जागरण

दर्शन, शास्त्रार्थ और एक संन्यासी की अद्वितीय जीवन-यात्रा — जिन्होंने भारत के वैचारिक परिदृश्य को हमेशा के लिए बदल दिया।

Gemini Notebook

कालखंड का ऐतिहासिक रहस्य और भगवान शिव का वरदान

मठ परंपरा (प्रमाणित सत्य):
507 ईसा पूर्व। युधिष्ठिर संवत् 2631 में जन्म। गोवर्धन पीठ और चित्सुखाचार्य के 'बृहच्छंकरविजय' ग्रंथ द्वारा पुष्ट।

ऐतिहासिक भ्रम (788 ईसवी):
चिदंबरम निवासी 'अभिनव शंकर' (मठ के ही एक आचार्य) के जन्म को इतिहाकसारों द्वारा भूलवश आदि शंकराचार्य का जन्म मान लिया गया।

शिवगुरु और आर्याम्बा को स्वप्न में भगवान शिव का वरदान—
'सर्वज्ञ पुत्र दीर्घायु नहीं होगा।'
इसी वरदान के फलस्वरूप उनका नाम 'शंकर' रखा गया।

Gemini Notebook

बालपन से ही प्रखरता और करुणा का अद्भुत संगम

विपन्नता पर करुणा (कनकधारा)

एक निर्धन ब्राह्मणी द्वारा भिक्षा में मात्र एक आँवला देने पर बालक शंकर का हृदय द्रवित हुआ। उन्होंने तुरंत 'कनकधारा स्तोत्र' की रचना कर उसकी दरिद्रता दूर की।

खोखले धर्म पर प्रहार

एक धनी सेठ द्वारा भिक्षा प्रस्तुत करने पर शंकर ने हाथ पीछे खींच लिए और कहा—
'जिसके हृदय में अपने समाज के लिए प्रेम नहीं, उसका धर्म केवल प्रदर्शन है।'

Gemini Notebook

आठ वर्ष की आयु में वैराग्य और वचनों की मर्यादा

- अल्पायु में चारों वेदों का पूर्ण अध्ययन कर वैराग्य का संकल्प।
- माता आर्याम्बा द्वारा रोके जाने पर 5 वर्ष के संन्यासी 'नारद मुनि' का उदाहरण दिया।
- अंतिम वचन: माता को आश्वासन दिया कि जीवन के अंतिम पड़ाव पर उपस्थित रहकर स्वयं उनका दाह-संस्कार करेंगे (जो संन्यास धर्म के नियमों के विपरीत था)।

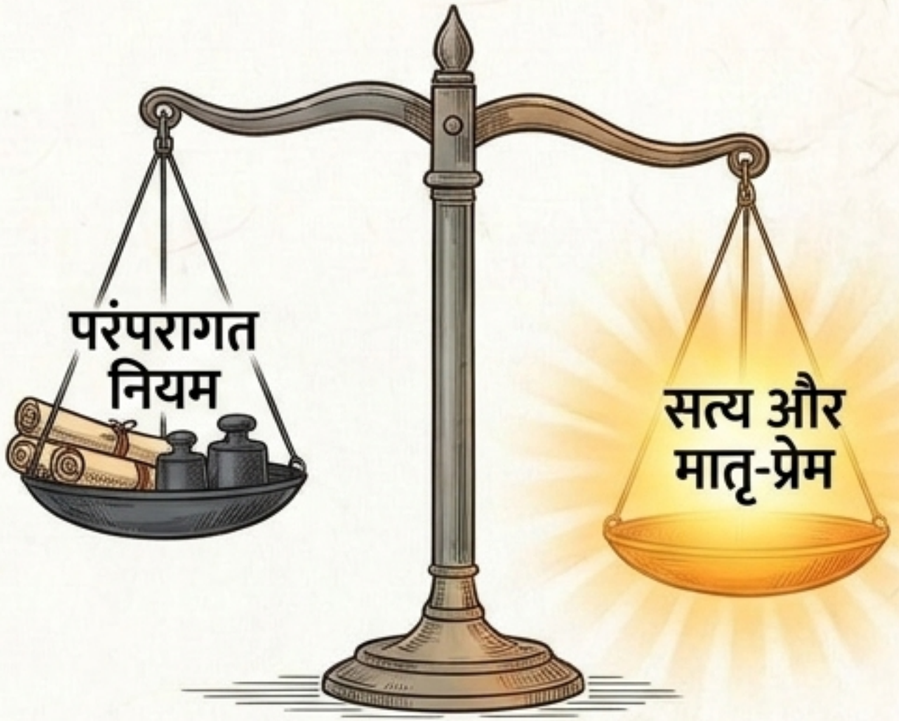

'जब मन में सत्य जानने की जिज्ञासा पैदा हो जाती है तब दुनिया की बाहरी चीजें अर्थहीन लगती हैं।'

Gemini Notebook

वेदांत से पूर्व भारत का विखंडित वैचारिक परिदृश्य

वैदिक धर्म की वैचारिक शून्यता

वैदिक दर्शन
(आस्तिकता में मतभेद)

- कणाद (वैशेषिक) – भौतिकवाद
- कपिल (सांख्य) – द्वैत
- गौतम (न्याय) – द्वैधीभाव

अवैदिक दर्शन
(वेद और ईश्वर को नकारना)

- चार्वाक (लोकायत)
- जैन (अर्हत)
- बौद्ध (तथागत)

आदि शंकराचार्य का प्रादुर्भाव: सनातन को एक सूत्र में पिरोने की आवश्यकता।

Gemini Notebook

2000 किलोमीटर की यात्रा और अद्वैत का शंखनाद

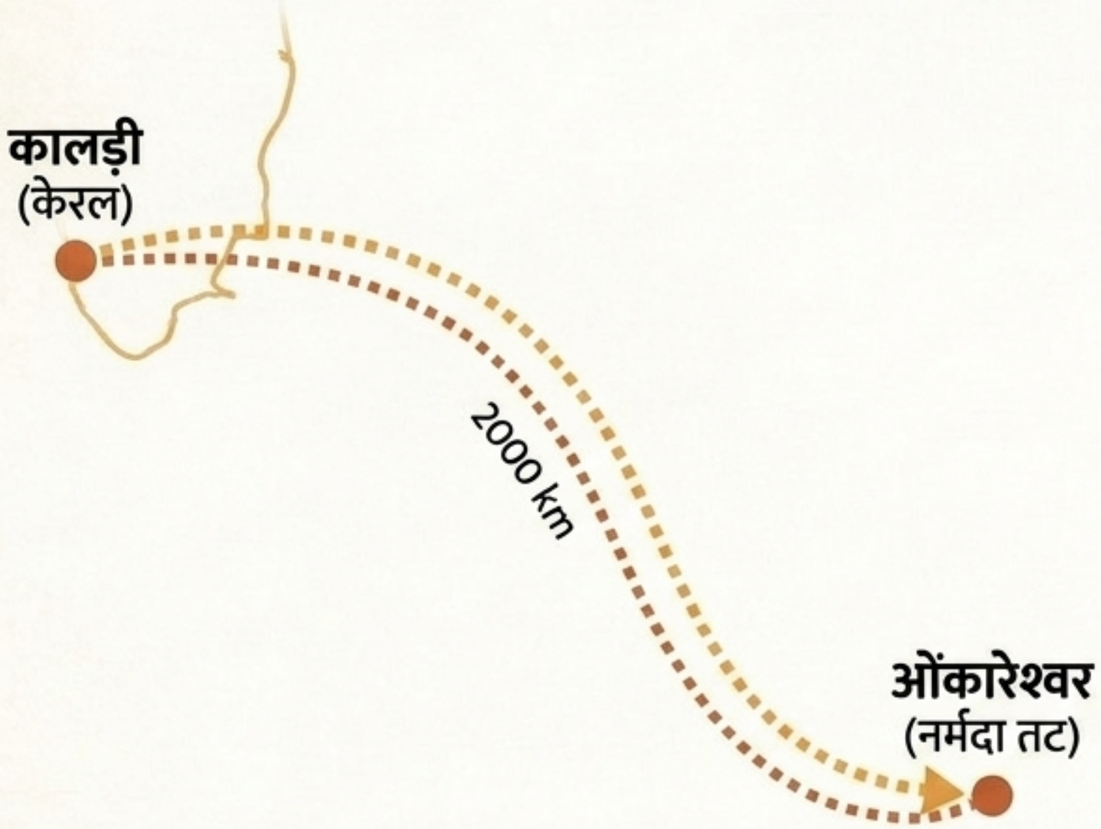

गुरु की खोज: कालड़ी से चलकर ओंकारेश्वर में श्री गोविंद भगवत्पादाचार्य (गौड़पादाचार्य के शिष्य) से दीक्षा प्राप्त की।

अंत:करण की शक्ति: दीनदयाल जी के अनुसार, 'अंत:करण की धनाढ्यता ही उनका एकमात्र धन था।' इसी स्फूर्ति से 'अच्युताष्टक' की रचना की।

अद्वैत का मूल मंत्र: 11 वर्ष की आयु में शास्त्रों में पारंगत होकर उन्होंने सर्वोच्च दर्शन प्रस्तुत किया—

'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'

(ब्रह्म ही सत्य है और जगत् माया है। आत्मा की गति मोक्ष में है)।

Gemini Notebook

रूढ़ियों पर प्रहार: 'नियम साध्य नहीं, साधन हैं'

रूढ़िवादी नियम:	शंकराचार्य का कर्म:
संन्यासी को दाहकर्म की आज्ञा नहीं होती।	माता को दिए वचन हेतु घर के आँगन में चिता रचकर स्वयं अग्नि-संस्कार किया। (माता को अद्वैत समझाने हेतु 'तत्वबोध' और 'कृष्णाष्टक' रचा)।

- **संसार त्याग का वास्तविक अर्थ:** 'संन्यास का अर्थ वन में तपस्या करना नहीं, देश और धर्म के लिए निष्काम कर्म करना है।'
- **प्रकृति पर नियंत्रण:** गुरु की सेवा के दौरान नर्मदा में भीषण बाढ़ आने पर **'नर्मदाष्टक'** की रचना कर जल को अपने कमंडल में समेट लिया।

अपने बनाए हुए नियमों के हम स्वामी हैं, दास नहीं। साधन का उपयोग तब तक है, जब तक वह साध्य को प्राप्त करने में सहायक हो।

Gemini Notebook

माहिष्मती नगरी का ऐतिहासिक शास्त्रार्थ

वातावरण: मंडन मिश्र का द्वार—जहाँ पिंजरे में बंद पक्षी भी वेद प्रमाणों (स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं) पर शास्त्रार्थ करते थे।

प्रतिद्वंद्वी 1 (मंडन मिश्र)	प्रतिद्वंद्वी 2 (आदि शंकराचार्य)
पूर्व-मीमांसा के अनुयायी, कर्मकांडी, कुमारिल भट्ट के शिष्य।	अद्वैत वेदांत के प्रणेता, ज्ञानमार्गी संन्यासी।

निर्णायक: मंडन मिश्र की विदुषी पत्नी 'भारती' (सरसवाणी)।

भारती ने दोनों के गले में पुष्प-मालाएँ डालीं। मंडन मिश्र की माला क्रोध और चिंता के ताप से सूख गई, जबकि शंकराचार्य की माला ताजी रही। शंकराचार्य विजयी घोषित हुए।

Gemini Notebook

ज्ञान की पूर्णता के लिए ‘परकाया-प्रवेश’

- **भारती की अंतिम चुनौती:**
  आपका सर्वात्मैक्य का सिद्धांत संन्यासी के लिए सत्य हो सकता है, परंतु जो गृहस्थ है, वह आपके नैष्कर्म्य को व्यवहार में कैसे लाए? इसमें अव्यावहारिकता का दोष है।

- **अनुभव की खोज:** निरुत्तर शंकराचार्य ने व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने हेतु योगबल से एक मृत राजा की देह में प्रवेश (परकाया-प्रवेश) किया।

- **समाधान:** छह माह पश्चात् अपनी देह में लौटकर उन्होंने वेदांत के गृहस्थ और संन्यासी–दोनों पक्षों का ऐसा सटीक समाधान प्रस्तुत किया कि भारती भी नतमस्तक हो गईं।

Gemini Notebook

कर्मकांड का खंडन नहीं, बल्कि 'आत्मयज्ञ' के रूप में परिष्कार

- **शंकराचार्य** ने **मीमांसा** दर्शन के 'ज्ञान-कर्म-समुच्चयवाद' का परिमार्जन किया।
- उन्होंने **मंडन मिश्र** और **भारती** को बाह्य यज्ञ के स्थान पर 'आत्मयज्ञ' पर ज़ोर देने को कहा।
- **यज्ञीय भावना:** जीवन के उपभोग के लिए नहीं, **बल्कि मानव-आदर्शों की प्राप्ति** के लिए किए गए कर्म ही सच्चा यज्ञ हैं। पंचयज्ञ और संस्कार बने रहेंगे, किंतु उनके प्रति 'दुराग्रह' नहीं होगा।

पराजित होने के पश्चात मंडन मिश्र 'सुरेश्वराचार्य' और भारती 'सरस्वती' के रूप में शंकराचार्य से संन्यास ग्रहण कर उनके शिष्य बने।

Gemini Notebook

अद्वैत दर्शन का मर्म: ‘मन ही सबसे बड़ा तीर्थ है’

मन की शुद्धि: तीर्थ करने के लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, सबसे बड़ा तीर्थ आपका अपना शुद्ध मन है।

मोह एक स्वप्न है: मोह से भरा इंसान एक सपने की तरह है; जब अज्ञान की नींद खुलती है, तो इस माया की कोई सत्ता नहीं रह जाती।

आत्मसंयम: बाहरी तत्वों और दुनियावी आकर्षणों को खुद से दूर रखना ही संयम है। अज्ञान छँटते ही आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है (जैसे बादलों के हटने पर सूर्य)।

“अब तुम लोग ‘ॐ अहं ब्रह्मास्मि’ ज्ञान से सुप्रतिष्ठित हो जाओ।”

Gemini Notebook

सनातन की रक्षा के लिए चार दिशाओं में चार स्तंभ

उत्तर: ज्योतिर्मठ (बद्रीनाथ) – शिष्य: तोटक (तोटकाचार्य)

पश्चिम: शारदा मठ (द्वारका) – शिष्य: हस्तामलक

पूर्व: गोवर्धन मठ (पुरी) – शिष्य: पद्मपाद (सनंदन)

दक्षिण: शृंगेरी मठ (कर्नाटक) – शिष्य: मंडन मिश्र (सुरेश्वराचार्य)

इन दसों संप्रदाय के संन्यासियों ने वैदिक धर्म को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए सम्पूर्ण भारत में शास्त्रार्थ और धर्मानुष्ठान किए।

Gemini Notebook

32 वर्ष की अल्पायु में सनातन का अमर प्रभाव

- मात्र 32 वर्ष की आयु में (477 ई.पू.) महासमाधि (निर्वाण) प्राप्त कर ब्रह्मलोक प्रस्थान किया।
- अपने छोटे से जीवनकाल में 11 उपनिषदों, ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता पर अद्वितीय भाष्य रचे।
- उन्होंने भारतवर्ष को एक ओर रूढ़िवादी कर्मकांड और दूसरी ओर नास्तिक जड़वाद के गर्त में गिरने से बचाया।

आदि शंकर केवल दार्शनिक नहीं, अपितु 'शिवावतार' थे। उनके द्वारा सिंचित अद्वैत वेदांत और सांस्कृतिक एकता की जड़ें आज भी भारतीय चेतना को प्राणवान बनाए हुए हैं।

Gemini Notebook